भजन

तर्ज–अपने रूठे पराये रूठे यार रूठे न

बैठे चरणों तले पिया के, तन ये रूहों के
झूठी माया को दिखलायें, अपने नैनों से
वाणी से जानी हैं रूहें, भेद ये सारे
याद वो आए नजारे, धाम के सारे
पिया जी ले चलो..., अपनी मेहर करो
धाम के सुख दे दो, रूहों को

1–सुन्दर सरूप पिया,सागर नूर का,दिल तो है इश्क से भरा
कोमलता अधरों की,लाली वो गालों की,नैनों में प्यार है भरा
रसना के सुख कैसे कहूं मैं, देते करके प्यार
रूहें जानें अर्श की जो हैं, लेती बेशुमार
वाणी से जानी...

2–कुंजवन में दौड़ना,मधुवन में खेलना,जमुना जी साथ झीलना
युगल जोड़ी संग,हंसना वोह बोलना,ताड़वन में साथ झूलना
धाम का नूरी नजारा, दे दो रूहों को
मस्ती कायम वोह ही दे दो, अपनी रूहों को
वाणी से जानी..

3–पर्वत कहूं पुखराज जहां से,चली जमुना जी लहराए
खाए मरोर चली कई भांतें,हौज कौसर में मिली आए
हौज कौसर देखो रूहो,टापू हैं मोहोलात
झीलती हैं संग पिया के,श्यामा जी हैं साथ
वाणी से जानी..

4–नव भोम, दसमी आकाशी,रंगमोहोल कहूं बात
बैठत प्यारे, पिऊ संग रूहें,चांदनी आवे जब रात
देखो रूहों चांदनी रात,नूर की बरसात
बैठे राजश्यामा जी सिंघासन,बैठा है सब साथ
वाणी से जानी...